# भोभर में बची आग को सहेजती कहानिया

(समीक्षा : पुस्तक 'अंतर्ध्वनि' कथा संग्रहय; लेखक मुरलीधर वैष्णव; संस्करण 2021.; रॉयल प्रकाशन, जोधपुर)

समीक्षा लेखक
डॉ० संदीप अवस्थी,
**अध्यक्ष, भारतिय विद्धया अध्ययन केन्द्र, राजस्थान**
**ई - मेल :**
**leooriginal2010@gmail.com**

**सार(Abstract):**— कहानी हमारे आपके मध्य ही जन्म लेती है परन्तु कई बार कुछ अंतराल में वह असामयिक मृत्यु को प्राप्त हो जाती है क्योंकि संवेदना के बारीक तंतु को पकड़ना, उसे आत्मसात करना, परकीया प्रवेश कर पीड़ा, बेचौनी को जीते हुए शब्दों को काल के शिलालेख पर उकेरना वास्तव में कोई बहुत कठिन राह से गुजरा राही ही कर पाता है। मुरलीधर वैष्णव उसी पीड़ा और संवेदना के राही है। दरअसल शब्दों के माध्यम से समष्टि की पीड़ा को स्वर ही नहीं देना बल्कि उसे पाठकों के सामने साकार कर देने का हुनर उन्हें समकालीन कहानीकारों में अग्रिम पंक्ति में रखता है। चेखव ने कहा है कि, ''कहानी कोई समाधान दे यह जरूरी नहीं परन्तु वह आपको सचेत करे यह जरूरी है।

**बीज शब्द**- प्रताड़ना, आंचलिकता, राजस्थान, कहानी, अंतर्ध्वनि, वैष्णव ।

कहानी हमारे आपके मध्य ही जन्म लेती है परन्तु कई बार कुछ अंतराल में वह असामयिक मृत्यु को प्राप्त हो जाती है क्योंकि संवेदना के बारीक तंतु को पकड़ना, उसे आत्मसात करना, परकीया प्रवेश कर पीड़ा, बेचौनी को जीते हुए शब्दों को काल के शिलालेख पर उकेरना वास्तव में कोई बहुत कठिन राह से गुजरा राही ही कर पाता है। मुरलीधर वैष्णव उसी पीड़ा और संवेदना के राही है। दरअसल शब्दों के माध्यम से समष्टि की पीड़ा को स्वर ही नहीं देना बल्कि उसे पाठकों के सामने साकार कर देने का हुनर उन्हें समकालीन कहानीकारों में अग्रिम पंक्ति में रखता है। चेखव ने कहा है कि, ''कहानी कोई समाधान दे यह जरूरी नहीं परन्तु वह आपको सचेत करे यह जरूरी है।''

हमारे आस–पास के वे स्वर जिन्हें हम अक्सर अनसुना कर देते हैं, जिन्हें हम याद भी नहीं करना चाहते और वे घाव कब हमें नासूर की तरह टीसते हैं हमें बहुत देर होने के बाद पता चलता है। इस संग्रह की कहानी 'अपात्र' का जिक्र सबसे पहले यहां एक सनातनी वैष्णव पिता है जो डॉक्टर बेटे के द्वारा हरिजन तहसीलदार को घर पर साथ खाना खिलाने से कुपित होकर उसे जनेऊ पहने रखने से वंचित कर देता है। परिवेश में एक आग्रह है कि आज भी कुछ पुराने लोग जाति–पाँति की संकीर्णता से बंधे रहते हैं लेकिन प्रकृति का नियम है कि मनुष्य में हृदय परिवर्तन की संभावना सदा बनी रहती है। किसी असाधारण परिस्थिति में वह अपने दकियानुसी सोच को तिलांजलि दे कर समय की सच्चाई से रूबरू भी हो सकता है। कहानी का अंत एक दिलचस्प घटनाक्रम से होता है।

जिंदगी में हम सभी शोषण के दौर से गुजरते हैं और उसे जिम्मेदारी, फर्ज या ऐसा सबके साथ होता है, का नाम देते हैं और जब निकलते हैं उस दौर से बाहर तो ज्यादातर खुद उसी अत्याचारी शोषक की भूमिका में कब आ जाते हैं यह भी नहीं जानते। लेकिन असंख्य लोग ऐसे भी हैं जो आज भी जन्म से मृत्यु तक शोषण, पीड़ित ही रहते हैं। मुँह नहीं खोल पाते। 'पिटोकड़ा' उर्फ पीराराम की बात कहती संग्रह की यह बेहतरीन कहानी है। एक बंधुआ मजदूरन का बेटा ठाकुर के यहां पीढ़ियों से गुलाम है। नई पीढ़ी का यह बालक भी ठाकुर के पुत्र का ऐसा नौकर बना कि ठाकुर का कुंवर बैटिंग करे तो रन के लिए पिटोकड़ा दौड़े, स्कूल में मास्टर साहब कुंवर के होमवर्क को अधूरा पाएं तो मुर्गा पिटोकड़ा उसे जताया जाता है कि उसकी नियति है कि यह सदा दयनीय ही बना पिता रहे पिटता रहे बहुत बड़ी पीड़ा दर्द को स्वर दिए है लेखक ने इस कहानी में यह सामान्य बालक कभी–कभी अकेले बैठता तो सोच में सूबा रहता ठाकुर की मृत्यु के बाद यह कुंवर युवावस्था में ठाकुर बन कर गांव जतीन जायदाद बेच कर मुम्बई में बस जाता है। युवा पिटोकड़ा मैं किराए की टैक्सी चलाता हुआ जयपुर के होटल में अचानक उससे मिलता है। कुंवर साहब को झुककर खम्मा घणी करता है। बानगी देखिए सोच और सामन्तवादी मानसिकता की कि यहाँ भी कुंवर अपनी बला उसके सिर मढ़ देता है झूठ बोलकर पुलिस के द्वारा अचानक हाइवे पर पकड़े जाने पर पिटोकड़ा को अहसास होता है कि आजादी के सत्तर सालों बाद भी उस जैसे असंख्य लोग पिटोकडे ही बने हुए हैं क्या रास्ता है? विद्रोह होगा ही, लेकिन दिक्कत यह है कि व्यक्ति के खिलाफ न होकर वह समष्टि के खिलाफ हो जाता है और हल नहीं निकलता । किया अ ने और दंड झेलते है ब और स इसी व्यवस्था और सोच को बदलना है।

'अंगूठों बोलेगो','केशर कश्मीरा', 'अणची', 'कोर्ट एडजर्नड' ऐसी ही प्रतिरोध को स्वर देती कहानियाँ है जिसमें पात्र अपने खिलाफ हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज, बेबसी में ही सही, पर उठाते हैं। क्योकि व्यवस्था, सामंतवादी सोच और हिटलरी मानसिकता ने कोई विकल्प ही नहीं छोड़ा जीवन में सहे जाओ और मौत चुनो या फिर विद्रोह करो।

लेकिन यह आवाज उठाने का अंतिम विकल्प न रहकर पहला ही कदम बन जाए तो? हर तरह के अन्याय शोषण, रूढ़ियों, फरेब का तनिक भी अहसास होते ही उसका पुरजोर प्रतिकार विरोध दम भर के हो तो कोई परिवर्तन हम सोच में देखेंगे।

राजस्थान आज पिछड़ेपन से उबर रहा है। लेकिन कई दशकों बाद भी वह सोच है जो स्त्रियों को दोयम दर्ज का नागरिक मानती है 'बाया से बेरो','अणची' कहानियां हमें बहुत कुछ सोचने को मजबूर करती हैं। यह भी कि कहीं हमारे प्रतिरोध, सोच और तैयारी में कमी तो नहीं? क्या हम नाम के लिए ही शिक्षित हुए या हममें जागरुकता आई? आई तो क्या हमने सबसे पहले दूसरों की तकलीफ, दर्द पर बातें बनाना और यह भाव कि ''अपन तो अच्छे है. अपने साथ यह सब नही हुआ'' कहकर अपने दायरे को और समेटना बन्द किया या नहीं? सोचके देखें और स्वयं को जवाब दें कि किसके दर्द, तकलीफों को आपने बांटा ? कितनी नम आंखों के आंसू आपने पोछे? यही मनुष्य होने और ईश्वर की हमारे मध्य हाजिरी है। प्रेमचंद फिर रामविलास शर्मा फिर नामवर सिंह सभी यह बात कहते हैं कि साहित्य समाज और राजनीति के आगे चलने वाली मशाल है। जिसके उजाले में राष्ट्र अपनी राह बनाता और चलता है।'' सच्चे लेखक का यह कर्तव्य है कि वह गलत बातों, अत्याचारों और शोषण के विरुद्धा आँखों में आग लेकर खड़ा हो उसे अपने सृजन का विषय बनाएं। आप पढ़ो दस अच्छी किताबों को तो खुद ही अपनी रचना की कमियां जान जाओगे और आगे सुधारकर अच्छे लेखक बनने की राह पर आ जाओगे।

साहित्य लेखन वह भी कोर्ट और न्यायिक विषयों पर बहुत दुरूह और उबाऊ हो जाता है। लेकिन लेखक स्वयं लगभग चार दशक तक न्यायिक अधिकारी रहे हैं तो उस क्षेत्र की घटनाओं और अनुभव को वैष्णव ने प्रामाणिकता और रोचकता के साथ कहानियों में पिरोया है । ''उड़ता तीर'

(लगातार पनिशमेंट पोस्टिंग की मार झेलता मजिस्ट्रेट) 'युद्ध''दूध से पेट्रोल तक', 'कोर्ट एडजन्ड' ऐसी ही दिलचस्प कहानियाँ हैं जो हमें उस दुनिया में ले जाती हैं जो आम व्यक्ति की पहुंच से बाहर है। यानि जज, न्यायपालिका के रास्ते, उनकी कड़वी मीठी सच्चाई और ईमानदार खरे व्यक्ति के सम्मुख आने वाली चुनौतियां और उससे जूझता न्यायाधीश तो कभी राहत भरे सुखद दृश्य भी।

इन सब में यह बात स्पष्ट है कि जागरूक, वैचारिक दृढ़ता और कठोर निश्चय के बिना आप आज के जीवन में सिर उठाकर नही जी सकते। संग्रह से ही एक संवाद है, 'देख रही हूं कि भोभर यानि चुल्हे की राख में आग है या नहीं?' यह बहुत गहरी बात है कि हम सभी में वह आग बची है या जीवन की आपाधापी अभावों, सुविधाओं को जुटाते हुए हम सभी आगविहीन हो गए हैं? ऐसे बुत जो बस देखने के ही काम के हैं और उनका कोई उपयोग नहीं । यह नहीं होना चाहिए। विश्वास के साथ अपने अंदर की आग को कुरेदें, जगाएं और किसी अभावग्रस्त, पीड़ित का चूल्हा रोशन करें।

संग्रह की कहानियाँ एक विविधतापूर्ण संसार से हमे परिचित कराती हैं। लेखक ने भाषा सहज, सरल और पात्रों की आंचलिकता के अनुकूल रखी है। बस यह ध्यान रखने की जरुरत है कि कुछ कहानियों में अति नाटकीयता या कहें सुविधा से थोड़ी आजादी लेखक ने ली है। बाकी सभी कहानियों में यथार्थ के धरातल पर पात्र हमसे आपसे मिलने को उत्सुक हैं। बस आइए, और इस सषक्त कथा संग्रह 'अंतर्ध्वनि' के नाद को सुनिए।

----------00--------

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पुस्तक 'अंतर्ध्वनि' कथा संग्रहय; लेखक मुरलीधर वैष्णव; संस्करण 2021.; रॉयल प्रकाशन, जोधपुर

----------00--------